जैन विश्व भारती-समण संस्कृति संकाय, लाडनूँ

जैन विद्या परीक्षा : सत्र 2014-2015

7 ब

जैन विद्या - भाग - 7

(जीव-अजीव)

समय : 3 घण्टे | प्रश्न पत्र : द्वितीय | पूर्णांक 100

नोट- पिछले कोर्स से 15 नम्बर के प्रश्न इस प्रश्न पत्र में पूछे जा सकते हैं।

(A) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। 10×2=20

1. किस-किस प्राण की कौन-कौन सी पर्याप्ति कारण है?
2. आयु के दो प्रकार कौन-कौन से हैं?
3. एक साथ कितने-कितने शरीर हो सकते हैं?
4. मनःपर्यव ज्ञान की भांति मनःपर्यव दर्शन क्यों नहीं होता?
5. अपवर्तन सत्ता किसे कहते हैं?
6. दूसरे, चौथे, चवदवें गुणस्थान का कालमान लिखें।
7. अचक्षु दर्शन किसे कहते हैं?
8. आत्मा के कितने गुण हैं? नाम लिखिए।
9. अजीव के कोई तीन मुख्य भेद और उनके गौण भेद लिखिए।
10. लेश्याओं के रसों का नाम लिखिए।
11. रसनेन्द्रिय के कितने विषय है? नाम लिखिए।

(B) किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दें। 10×4=40

1. सत्य भाषा के 10 भेद बताते हुए किन्हीं पांच का वर्णन करें।
2. चारित्र किसे कहते हैं? पांच चारित्र के नाम बताते हुए छेदोपस्थापनीय चारित्र के बारे में लिखें।
3. बंध और पुण्य-पाप में क्या अन्तर है?
4. गति शक्ति धर्मास्तिकाय में विद्यमान है या जीव पुद्गल में। स्पष्ट करें।
5. कर्म जड़ है-फिर वे यथोचित फल कैसे दे सकते हैं?
6. निर्जरा किसे कहते हैं? इसके कितने भेद है? बाह्य भेदों का वर्णन करें।
7. प्रज्ञा के कितने प्रकार की होती है? नो कोटि प्रत्यास्थान में 21, 22, 23 भांगो को समझाइए।
8. वायुकाय के मुख्य भेद कितने हैं? लिखें।

9. शुभ योग मुक्ति में साधक या बाधक? समझाइए।
10. गति किसे कहते हैं? गति के प्रकारों को समझाइए।
11. कर्म किसे कहते है? कर्मों की अवस्थाओं को संझेप में समझाइए।

(C) किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें। 4×10=40

1. जैन दर्शन में किसी कार्य की उत्पति के लिए पांच कारण माने गये हैं। उदाहरण सहित व्याख्या करें।
2. पांच इन्द्रियों के कितने विषय है? विस्तार से लिखें।
3. लेश्या पर एक लघु निबंध लिखें।
4. पर्याप्ति किसे कहते हैं? पर्याप्ति किस प्रकार हमारा जीवन निर्माण करती है? समझाइए।
5. आत्मा अमर है, स्पष्ट करें।